बापू का बलिदान

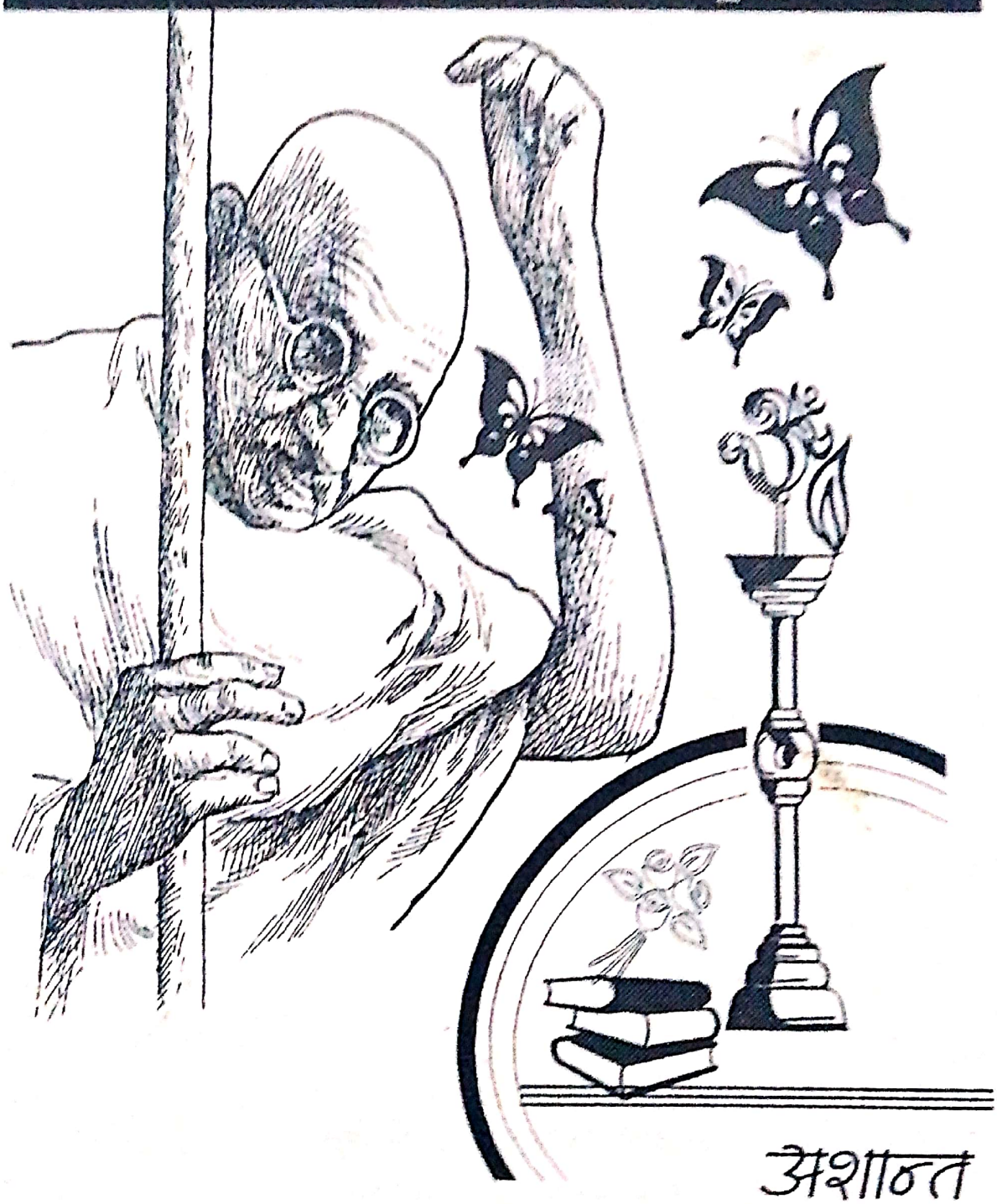

अशान्त

Scanned with OKEN Scanner

कृति - बापू का बलिदान

संस्करण - 2007

डॉ. सरोज गुप्ता

मूल्य - 25/-

प्रकाशक - बुन्देली लोक साहित्य संस्थान,
स्नेह नगर, मधुकर शाह वार्ड, सागर (म.प्र.)

अक्षर संयोजन एवं मुद्रण - सुलभ प्रिंटर्स, सागर (म.प्र.)
☎: 07582-243159

Scanned with OKEN Scanner

दो शब्द

'बापू के बलिदान' गीत काव्य पुस्तक में युग की नवीन धारा में बहते हुए, बापू के प्रति श्रद्धांजली अर्पित की है। इस पुस्तक में मैंने बापू के जीवन की अनेकों घटनाओं पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है तथा उनका, उनके बलिदान तक सजीव चित्र चित्रित करने का प्रयत्न किया है। यदि जनता ने इसे किंचित मात्र भी अपनाया तो मैं अपना प्रयास सफलीभूत समझूँगा।

झाँसी

'अशान्त'

Scanned with OKEN Scanner

संयोजना

विश्व के घोर संकट में,
जगत निर्माण हो, बापू।
जगत के घोर क्रन्दन में,
नियति के गान हो, बापू॥

द्वेष-निष्प्राण जनता में,
सृष्टि के प्राण हो, बापू।
देश की सेवा के हित तुम,
जननि बलिदान हो, बापू॥

कराहों की प्रखर आहें,
भभकती आज देखी हैं।
जगत की बिखरती चाहें,
धधकती आज देखी हैं॥

नियति की निखरती राहें,
कसकती आज देखी हैं।
अश्रु से भरी हुई आँखें,
सिसकती आज देखी है॥

तड़पता आज अम्बर भी,
तड़पती भावना देखी।
बिलखते आज बादल पर,
बिलखती कामना देखी॥

सिसकता है किसी का उर,
सिसकती आज बालायें।
प्रलय की अनल आहुति में,
लहरती आज ज्वालायें॥

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner